प्रकाशन तिथि : 15 अप्रेल, 2021
प्रेषण तिथि : 19 अप्रेल, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 03 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पतन को रोकने का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ- बैण्यांकाबास

(हीरक जयन्ती वर्ष के कार्यक्रमों की श्रंखला अनवरत जारी)

हमारी कौम वो कौम है जिसने समय समय पर ऐसे महापुरुष समाज को दिए हैं जिन्हें ईश्वर के समकक्ष रखा गया। हम राम की बात करें जिन्होंने अपने कर्म से, अपने कृतित्व से मर्यादित आचरण से ऐसा जीवन जिया कि सारा संसार उन्हें मयार्दा पुरुषोत्तम राम के रूप में पूजता है। उनका जीवन चरित्र ऐसा महान ग्रंथ बन गया जो हमारे समाज और देश के लिए हजारों वर्षों से प्रेरणास्रोत बना हुआ है। उन्होंने सुशासन का ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया कि आज भी शासन व्यवस्था की श्रेष्ठता की व्याख्या के लिए रामराज्य से बढ़कर कोई उपमा नहीं मिलती है। हमारे पूर्वजों ने इसी प्रकार हर क्षेत्र में आगे बढ़ कर सीमाएं बांधी हैं जिन्हें आज तक कोई पार नहीं कर सका।

वीरता के क्षेत्र में सिर कटने के बाद भी लड़ने वाले लोग केवल हमारी ही कौम ने दिए हैं। शत्रु से अपने सम्मान की रक्षा के लिए जीवित आग में जलने की जौहर जैसी परंपरा भी हमारी कौम की ललनाओं ने ही बनाई। भक्ति के क्षेत्र में प्रह्लाद, ध्रुव और मीरां जैसे प्रतिमान हमारी ही कौम के रत्न हैं। कितने उदाहरण दिए जाएं? इस कौम की महानता निर्विवाद सत्य है। किंतु क्या केवल हमारे उज्ज्वल इतिहास का गुणगान करने से, हमारे पूर्वजों की महानता का बखान मात्र करने से कौम के भविष्य का निर्माण हो सकता है? क्या आज हम त्याग और बलिदान की उन परम्पराओं को निभाने वाली स्थिति में हैं? महाभारत के समय से हमारा पतन प्रारम्भ हुआ और यह पतन की प्रक्रिया आज भी जारी है। यह पतन कैसे रुकेगा? इन सभी प्रश्नों का ही उत्तर है - श्री क्षत्रिय युवक संघ। विगत 75 वर्ष से संघ कौम की सेवा में लगा हुआ पतन की धारा को रोककर उत्थान की ओर मोड़ने के लिए प्रयासरत है। यह कार्य अत्यंत कठिन है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

मधुबनी, मीडिया और सोशल मीडिया

बिहार के मधुबनी जिले के महमदपुर गांव में होली के दिन 5 लोगों की हत्या कर दी गई। हत्या करने वाली तथाकथित 'रावण सेना' का मुखिया वहां के राजपूत परिवार के तालाब पर कब्जा करना चाहता था। लगभग विगत छः माह से उसका यह प्रयास चल रहा था। कुछ माह पहले उस परिवार के एक सदस्य संजय सिंह पर हमला कर घायल किया था एवं उस पर झूठा एक्ट्रोसिटी एक्ट लगाकर गिरफ्तार करवाया। होली के दिन सामान्य बोलचाल के बाद 35-40 लोगों ने तमोगुण के प्रतीक रावण को आदर्श मानने वाले प्रवीण झा के नेतृत्व में आधुनिक हथियारों से गोलीबारी की और एक एक कर उस परिवार के रणविजय कुमार सिंह, वीरेन्द्र कुमार सिंह, अमरेंद्र कुमार सिंह, राणा प्रताप सिंह, महंत रूद्रप्रताप नारायण दास की हत्या कर दी एवं छठा व्यक्ति मनोजकुमार सिंह अस्पताल में जीवन मरण के संघर्ष से जूझ रहा है। इतनी बड़ी घटना हो गई लेकिन हमें अखबार में कहीं पढने को नहीं मिला। किसी टी वी चैनल पर हमने इसकी ब्रेकिंग न्यूज भी नहीं देखी। सोशल मीडिया पर विभिन्न प्रकार की साईट्स बनाकर समाचार चलाने वाले लोगों ने भी इस घटना को पूरे देश तक पहुंचाना उचित नहीं समझा। छोटी छोटी खबरों को राष्ट्रीय ब्रेकिंग बनाने वाले समाचार माध्यमों के लिए यह खबर खबर ही नहीं थी इसीलिए तो 5-5 लोगों की निर्मम हत्या की सूचना का प्रसारण करना भी मुख्य धारा के मीडिया को आवश्यक नहीं लगा। यह वही मीडिया है जो हाथरस में कैंप कर कवरेज कर रहा था। जो अखलाक की मौत पर चीख रहा था। जिसके लिए किसी सुदूर कस्बे में किसी के साथ की गई सामान्य मारपीट भी राष्ट्रीय समाचार बन जाती है। लेकिन 5-5 लोगों की किसी रावण सेना द्वारा की गई हत्या उनके लिए समाचार नहीं बन पाई और कालांतर में माहौल गर्माने पर जब यह समाचार बनी भी तो इस प्रकार बनी जिसमें अपराधियों की दरिंदगी बताने की अपेक्षा बड़ी चतुराई से उनका पक्ष रखा जा रहा है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन का संवाद एवं संपर्क अभियान जारी)

सामाजिक भाव का विस्तार करें- सरवड़ी

आप सब आपस में मिलकर प्रसन्न हुए, अपने सामाजिक भाव को सबके सामने प्रकट किया एवं इस सामाजिक भाव के कारण स्वयं द्वारा समाज की सेवा के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। इसी सामाजिक भाव का विस्तार करना है एवं ऐसे भाव वाले लोगों को ढूंढ ढूंढ कर संयोजित करना है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा सौंपे गये संदेश को अग्रेतर प्रसारित करने हेतु संवाद एवं संपर्क के अभियान के तहत विगत 11 अप्रेल की शाम जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' जयपुर में चिकित्सा क्षेत्र में सेवारत समाज बंधुओं के कुछ प्रतिनिधियों की बैठक को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली की जानकारी देते हुए बताया कि संघ की लंबी साधना के परिणाम स्वरूप जो आधार तैयार हुआ है उसी का प्रकटीकरण अनेक प्रयोगों के रूप में हो रहा है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ऐसा ही एक प्रयोग है जिसके तहत समाज के विभिन्न वर्गों की सकारात्मक शक्ति को समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। अधिकारियों, राजनेताओं, पंचायती राज प्रतिनिधियों आदि के भी इसी क्रम में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में आज आपकी बैठक रखी गई है। आप भी आपसी संपर्क को दृढ

बनायें, आपके व्यवसाय के अन्य समाज के लोगों से संपर्क बढायें एवं उस संपर्क का अधिकतम उपयोग समाज के लिए करें। आज की बैठक बड़े स्तर पर आयोजित की जानी थी लेकिन कोरोना के कारण इस छोटी बैठक से प्रारंभ किया जा रहा है। इसे निरंतर रखें एवं भविष्य में बड़ी बैठक भी रखें। इस बैठक में SMS के वरिष्ठ चिकित्सक संजय सिंह, होम्योपैथी युनिवर्सिटी कोलेज के प्राचार्य डा. अतुल सिंह, जयपुरिया अस्पताल के डा. गजेंद्र सिंह, राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के डा. भवानी सिंह, SMS लैब के मोहन सिंह, RHUS नर्सिंग अधीक्षक विनिता जी, SMS नर्सिंग स्टाफ संदीप सिंह, फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगी डा. जालम सिंह आदि ने अपने सुझाव एवं विचार साझा किए। इसी क्रम में चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहर भवन में कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए चित्तोड़गढ़ जिले की बैठक आयोजित की गई। बैठक के प्रारंभ में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली द्वारा गणेश वंदना एवं प्रार्थना करवाई एवं जिले भर से आए युवा संभागीयों का परिचय करवाया। फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य आजाद सिंह शिवकर ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के निर्माण एवं कार्य विधि की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि यह फाउंडेशन श्री क्षत्रिय युवक संघ का अनुषांगिक संगठन है **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

सामाजिक भाव का विस्तार करें- सरवड़ी

चित्तौड़गढ़

(पेज एक से लगातार)

तथा संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में समाज के युवाओं में व्यवस्था के प्रति व्याप्त नकारात्मकता को दूर कर उनके सकारात्मक सामाजिक भाव को समाज हित में उपयोग करने के लिए कार्य करता है। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने इसके उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि फाउंडेशन संघ द्वारा सौंपे गये उद्धेश्य के निमित्त समाज में सामाजिक भाव वाले युवाओं को सकारात्मक कार्य करने के लिए संयोजित कर उनमें संवैधानिक मूल्यों के प्रति आदर भाव पैदा करता है। समयानुकूल संवैधानिक साधनों एवं सरकारी योजनाओं के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करने एवं राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा अन्य क्षेत्रों में कार्यरत युवा नेतृत्व के बीच संपर्क एवं सामंजस्य पैदा कर उन्हें अधिकतम उपयोगी बनाने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ 75 वर्षों से कार्यरत है, यह वर्ष हीरक जयंती वर्ष है जिसमें वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगा सिंह साजियाली ने कहा कि समाज में युवा वर्ग को आगे आकर कार्य करना चाहिए इसीलिए पूज्यश्री ने संघ का नाम भी श्री क्षत्रिय युवक संघ रखा। बैठक में भाजयुमो जिलाध्यक्ष हर्षवर्धन सिंह रूद, सीआई सवाई सिंह बिजेरी, कानसिंह सुवावा, लालसिंह अमराणा, चमनपालसिंह अकोलागढ़, उदयसिंह सिंघोला, पुष्पेंद्रसिंह चौथपुरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अंत में मंत्रोच्चारण कर संगोष्ठी का समापन किया गया। इसी क्रम में केकड़ी स्थित राजपूत सभाभवन में 11 अप्रेल को बैठक रखी गई जिसमें आजादसिंह शिवकर व रेवंतसिंह पाटोदा ने फाउंडेशन की विस्तार से जानकारी दी। संघ के अजमेर ग्रामीण के प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालिया ने बैठक का संचालन हुए हीरक जयंती विषयक चर्चा की। आगामी दिनों में केकड़ी में EWS प्रमाण पत्रों के लिए शिविर लगाने का भी निर्णय लिया गया। इसी क्रम में फाउंडेशन के कार्य विस्तार कार्यक्रम के तहत बाड़मेर जिले में 10 अप्रैल की शाम को संस्कार धाम विद्यालय, गुड़ामालानी, 11 अप्रैल को दिन में श्री मल्लीनाथ छात्रावास सिणधरी में व इसी दिन शाम को श्री वीर कल्ला रायमलोत छात्रावास सिवाणा में बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य महेंद्र सिंह तारातरा ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि आज समाज में युवाओं के दिल में व्यवस्था के प्रति जो नकारात्मक भाव है उसे दूर कर समाज में सकारात्मक क्रियाशीलता को बढ़ावा देना मुख्य उद्देश्य है। इसी प्रकार संविधान के जो मूल तत्व है वो हमारे इतिहास व वर्तमान के अनुकूल है इसलिये संविधान के प्रति हमारे मन में आदर भाव होना चाहिए। हम अपने गांव या

चौहटन

शहर को अपना मानें, ये हमारे ही पूर्वजों द्वारा बसाये गये हैं, यहां की तकलीफों व कमियों से हमे पूरा सरोकार रखना चाहिए। केंद्रीय सरकार के स्तर पर आर्थिक आधार पर दिए गए आरक्षण में कई विसंगतिया विद्यमान हैं जिन्हें दूर करवाने के लिए फाउंडेशन द्वारा अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत पंचायती राज व नगर निकाय के जनप्रतिनिधियों से पत्र लिखवा कर प्रधानमंत्री को मेल करवाये जा रहे हैं। इसमें सभी से सहयोग करने का आह्वान किया गया। अपने स्थापना के 75वें वर्ष को श्री क्षत्रिय युवक संघ इस वर्ष को हीरक जयंती वर्ष के रूप में मना रहा है और इस उपलक्ष्य में वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम हो रहे हैं जिसमे सभी को अधिकतम भागीदारी निभाने का अनुरोध किया व 22 दिसम्बर 2021 को जयपुर में आयोजित विशाल कार्यक्रम में शामिल होने का सौभाग्य हासिल करने की भी चर्चा की गई तथा इसमें अधिकतम सहयोग की अपील की गयी। इससे पूर्व 3 अप्रेल की शाम चौहटन व 4 अप्रेल को रामसर में कार्यविस्तार बैठकें आयोजित की गईं। इसमें भी केन्द्रीय सहयोगी महेंद्र सिंह तारातरा के नेतृत्व में नरेशपाल सिंह तेजमालता, नेपाल सिंह तिबनियार, महेन्द्र सिंह चौहटन आदि ने स्थानीय सहयोगियों से संपर्क साधा एवं बैठक कर फाउंडेशन के विषय में विस्तार से चर्चा की। नागौर जिले में संघ के सहयोगियों द्वारा चलाये जा रहे संघ तीर्थ दर्शन कार्यक्रम में फाउंडेशन के सहयोगी जयसिंह सागुबड़ी शामिल रहे एवं निंबी जोधा, सिंघाणा, निंबोड़ा फांटा (जायल) आदि में आयोजित कार्यक्रम में फाउंडेशन का संदेश दिया।

बीकानेर व जालोर जनप्रतिनिधि कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आयोजित की जा रही पंचायती राज एवं अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधियों की कार्यशालाओं की श्रृंखला में 2अप्रेल को बीकानेर स्थित गंगा सरदार सभा भवन में बीकानेर जिले के जनप्रतिनिधियों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में फाउंडेशन की केन्द्रीय समिति के सदस्य यशवर्द्धन सिंह ने फाउंडेशन का परिचय प्रस्तुत किया एवं रामसिंह चरकड़ा ने विगत दो वर्षों में हुए कार्यों का वर्णन किया। कार्यशाला के उद्धेश्य पर चर्चा करते हुए बीकानेर जिले में स्थानीय स्वशासन में राजपूतों की स्थिति की बारे में बताया गया एवं उपलब्ध ऊर्जा को समाज के लिए अधिकतम उपयोगी कैसे बनाया जा सकता है इस पर सभी ने अपने विचार रखे। पूंगल सरपंच सिद्धार्थ सिंह, नरेंद्र सिंह हदां, जयसिंह हाडला, महिपाल सिंह लाखाऊ, मनोहर सिंह भाटी, सवाई सिंह चरकड़ा, भूपेंद्र सिंह कक्कू, शहर भाजपा अध्यक्ष अखिलेश प्रताप सिंह आदि ने चर्चा में भाग लिया। सभी ने स्वयं की ऊर्जा का अधिकतम उपयोग

बीकानेर

करने के उपायों के बारे में बताया एवं इसके लिए निरंतर मिलने की आवश्यकता जताई। EWS आरक्षण का अधिकतम लाभ लेने व पंचायती राज में भी इसे लागू करवाने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया। समाज के बड़े राजनेताओं के बीच व्याप्त दूरियों से अप्रभावित रहते हुए समाज के लिए उपयोगी बनने का आह्वान किया गया। सभी ने अपने कार्यकाल को श्रेष्ठ बनाने की चाह प्रकट की ताकि जनता के समक्ष समाज की बेहतर छवि बन सके। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के किस प्रकार सहयोगी बन सकते हैं इस पर भी चर्चा की गई। कार्यशाला का संचालन करते हुए बीकानेर शहर प्रांतप्रमुख खींव सिंह सुल्ताना ने संघ के हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों को लेकर जानकारी साझा की एवं सभी से सहयोग की अपेक्षा प्रकट की। इसी क्रम में 4 अप्रेल को जालोर स्टेडियम में स्थित बहुउद्देश्यीय सभा भवन में जालोर जिले के राजपूत प्रतिनिधियों की कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के प्रारंभ में जनप्रतिनिधियों को माननीय संघप्रमुख श्री का संदेश देते हुए बताया गया कि परमेश्वर की कृपा, जनता के स्नेह व समर्थन, समाज के सहयोग व आपकी अपनी योग्यता से आप आपको इन 5 वर्ष तक के लिए जनप्रतिनिधि के रूप में काम करने का अवसर मिला है। इस अवसर को उपलब्धि नहीं समझें बल्कि इसे अवसर मानकर उपलब्धि बनायें। यह उपलब्धि तब होगी जब आपके क्षेत्र की जनता यह कहे कि जनप्रतिनिधि तो आप जैसा होना चाहिए। इसलिए आप अपने आपको समाज के लिए कैसे अधिकतम उपयोगी बना सकते हैं एवं इस हेतु आपस में एक-दूसरे के कैसे सहयोगी बन सकते हैं इसी विषय को लेकर यह कार्यशाला आयोजित की गई है। कार्यशाला को रानीवाड़ा प्रधान राघवेंद्र सिंह, चितलवाना प्रधान प्रतिनिधि हिंदु सिंह दूठवा, प्रदीप सिंह सियाणा, बाघसिंह पूनक, रणजीत सिंह जेतु, भंवरसिंह थलुंडा, रामसिंह वलदरा, विरद सिंह पांथेड़ी, तेजसिंह पावटा आदि ने संबोधित किया एवं आपसी सहयोग व सामंजस्य के लिए उपयोगी सुझाव दिए। संघ के हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रमों को लेकर चर्चा की गई एवं जालोर में इसके तहत होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी।

पतन को रोकने का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ- बैण्यांकाबास

निंबोड़ा फांटा (जायल)

(पेज एक से लगातार)

एक व्यक्ति के जीवन में तो 75 वर्ष बहुत बड़ा समय होता है लेकिन किसी कौम के, समाज के जीवन में 75 वर्ष बहुत छोटा समय है। संघ कोई 'शॉर्टकट' नहीं है बल्कि एक दीर्घकालीन साधना है। संघ संस्कार निर्माण का जो कार्य कर रहा है वह उर्ध्वगामी स्वभाव वाला है इसीलिए यह केवल भाषणों और उपदेशों से संभव नहीं है। इसके लिए निरंतर अभ्यास ही एकमात्र मार्ग है। संघ एक बड़ी अराजक भीड़ को इकट्ठा करने की अपेक्षा एक अनुशासित व्यक्ति के निर्माण को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। उपरोक्त बातें संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने शेखावाटी प्रान्त के दूजोद गांव में आयोजित संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। 11 अप्रैल को आयोजित कार्यक्रम में डॉ. नेहा कंवर सोहड़ा, मोहन सिंह दूजोद तथा पूर्ण सिंह दूजोद ने भी विचार व्यक्त किए। प्रान्तप्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने कार्यक्रम का संचालन किया। संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के प्रति स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं का उत्साह निरंतर बढ़ रहा है तथा इसके उपलक्ष्य में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों के आयोजन निरंतर जारी है। इसी क्रम में दूजोद में भी अगस्त 1996 में लगे माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर की स्मृति में उक्त कार्यक्रम रखा गया था। इसी प्रकार 4 अप्रैल को जैसलमेर स्थित आसरी मठ के प्रांगण में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। बाड़मेर संभागप्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ का कार्य दीर्घकाल तक निरंतर चलने वाला कार्य है। सामाजिक स्तर पर संस्कार निर्माण का कार्य अत्यंत दुष्कर कार्य है, जिसका बीड़ा संघ ने उठाया है। हमारा जाज्वल्यमान इतिहास, हमारी महान परम्पराएं आज खोती जा रही हैं और हम किंकर्तव्यविमूढ़ बने हुए हैं। संघ हमें इस नींद से जगा रहा है, सोए हुए समाज में क्रांति का शंखनाद कर रहा है। हमारा कर्तव्य है कि हम इस पुनीत कार्य में सहयोगी बनें और पूज्य श्री तनसिंह जी के आह्वान को घर घर तक पहुंचाएं। क्षत्रिय का कर्त्तव्यपालन करना समय की मांग है, इस मांग को हमें पूरा करना ही होगा। सांवल सिंह मोढ़ा ने हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान चलाये जा रहे संघ तीर्थदर्शन अभियान के सम्बन्ध में जानकारी दी और कहा कि जैसलमेर में संघ का प्रथम प्रवेश 1959 में हुआ था जब जैसलमेर शहर में गडीसर के निकट व्यास बगीची में संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तत्कालीन सांसद व पूर्व महारावल रघुनाथ सिंह के सहयोग से आयोजित हुआ था। वरिष्ठ स्वयंसेवक रेवत सिंह झिंझनियाली ने उस शिविर के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि संघ अपने 75 वर्ष पूरे कर रहा है, इसमें अनेक स्वयंसेवकों की तपस्या लगी है। हमारा सौभाग्य है कि हम उस तपस्या को फलीभूत होते हुए देख रहे हैं। तारेन्द्र सिंह झिंझनियाली ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा रतन सिंह बडोडागांव द्वारा पूज्य तनसिंह जी रचित 'होनहार के खेल' कहानी का पठन किया गया। बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रान्त के बूठ जैतमाल में भी 31 मार्च को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी देवी सिंह माडपुरा ने कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि जब से क्षत्रिय स्वधर्म पालन से विमुख हुआ है तब से समाज में अराजकता का वातावरण बन गया है। इस बात को समझकर पथ विचलित राजपूत को क्षात्रधर्म का पाठ पढ़ाने के लिए पूज्य तनसिंह जी ने 1946 में संघ की स्थापना की। पिछले 75 वर्षों से संघ अपनी संस्कारमयी कार्यप्रणाली द्वारा समाज की युवा पीढ़ी को क्षत्रियोचित संस्कारों से संस्कारित कर रहा है। उन्होंने कहा कि संस्कार निर्माण में मातृशक्ति की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है इसलिए संघ द्वारा समाज की बालिकाओं को भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हमारी माताओं ने हमारे गौरव की रक्षा अपने प्राणों का बलिदान करके की थी और उनके त्याग से हमारी कौम का उज्ज्वल भविष्य भी निर्मित होगा। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रांतप्रमुख गणपत सिंह बूठ ने संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में जानकारी दी और बताया कि बूठ में संघ के तीन प्रशिक्षण शिविर वर्ष 2000, 2009 तथा 2016 में आयोजित हो चुके हैं। कार्यक्रम के दौरान बूठ, उण्डखा, मीठड़ा, आकोड़ा आदि गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग में ही बाड़मेर शहर प्रान्त के गेहूं गांव में भी संघ तीर्थदर्शन का कार्यक्रम आयोजन हुआ। 2 अप्रैल को सम्पन्न कार्यक्रम में संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने अपने उद्बोधन में कहा कि जिस स्थान पर भगवान की बात होती है, वही स्थान तीर्थ माना जाता है। तनसिंह जी की, संघ की बात भी भगवान की ही बात है। इसलिए जहां जहां संघ के शिविर लगे हैं वह सभी स्थान हमारे लिए तीर्थ है।

वसावा

काणेटी

इसी भाव के साथ यह कार्यक्रम रखा गया है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य अधिकाधिक व्यक्तियों तक संघ की बात को पहुंचाना है। प्रान्त प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने कहा कि गेहूँ में लगा शिविर मेरा पहला शिविर था इसलिए यह मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

4 अप्रैल को जालोर संभाग के पाली प्रांत में सोजत मंडल के बीजागुड़ा गांव स्थित सरस्वती विद्या मंदिर के प्रांगण में भी संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम रखा गया। प्रांतप्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा ने कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संघ की विचारधारा समझाते हुए कहा कि समाज में अमृत तत्व का पोषण और रक्षण करना संघ का उद्देश्य है। सज्जनों की रक्षा और दुष्टता का विनाश करने का गीता का संदेश संघदर्शन का मूल आधार है। 4 अप्रैल को ही बालोतरा संभाग के बायतु प्रांत में कानोड़ स्थित नागणेशी माता मंदिर के प्रांगण में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी देवीसिंह माडपुरा ने कहा कि क्षात्र परम्परा और संस्कृति को जितना नुकसान यवन, शक, हूण, तुर्क और मुगल मिलकर भी नहीं पहुंचा पाये, उससे अधिक नुकसान अंग्रेजो ने हमें विलासी और अकर्मण्य बनाकर पहुंचाया है। आज हमारे समाज में जैता-कुंपा, पाबूजी, प्रताप, दुर्गादास कैसे पैदा हो, इस पर चिन्तन की आवश्यकता है। संघ इसी कार्य में लगा हुआ है। संभागप्रमुख मूलसिंह काठाड़ी ने हीरक जयन्ती वर्ष और तीर्थदर्शन अभियान के संबंध में जानकारी प्रदान की। वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदन सिंह चादेसरा ने पूज्य तनसिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला और समाज में संघ कार्य की आवश्यकता को स्पष्ट किया। देवी सिंह गिड़ा द्वारा संघ साहित्य का वितरण किया गया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रान्त में बैनाथा में भी संघ तीर्थदर्शन व स्नेहमिलन कार्यक्रम 4 अप्रैल को आयोजित हुआ। प्रांतप्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी ने उपस्थित समाजबंधुओं से कहा कि संघ अपना हीरक जयन्ती वर्ष मना रहा है, इसमें हमें सहभागी बनने का अवसर मिला है यह हमारा सौभाग्य है। उन्होंने जुलाई में मनाई जाने वाली नारायण सिंह जी रेडा की जयंती के संबंध में भी जानकारी प्रदान की। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के अंतर्गत निम्बी जोधा गांव में गढ़ परिसर में 7 अप्रैल को संघ तीर्थदर्शन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

आसरी मठ (जालोर)

निंबी जोधा

संपादकीय

व्यवस्थागत कठोर वास्तविकताएं

प्रत्येक युग की अपनी व्यवस्था होती है और उसकी अपनी वास्तविकताएं होती हैं। उनमें से कुछ ऐसी कठोर होती हैं कि जिन्हें हमें न चाहते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है और उनके अनुसार अपनी यथोचित भूमिका तय करनी पड़ती है। ऐसी ही वास्तविकता भारतीय समाज व्यवस्था के आदर्श स्वरूप में पनपी विकृतियां थीं और ऐसी ही वास्तविकताएं उन विकृतियों के विरुद्ध वर्तमान में प्रतिक्रिया स्वरूप पनपी अवधारणाएं हैं जिन्होंने वर्तमान व्यवस्था में अपना प्रभावी व स्थायी स्थान बना लिया है। वर्तमान की इन कठोर वास्तविकताओं के प्रति हम प्रायः हमारी खीझ प्रटक करते रहते हैं। सोशल मीडिया जैसे सार्वजनिक पटल पर इस प्रकार का प्रकटीकरण मात्र इसका कोई उपाय नहीं है, बस हम अपने आप में थोड़े संतुष्ट हो जाते हैं कि हमने कुछ किया है और हमारी यह संतुष्टि प्रायः लाभ की अपेक्षा हानि के मार्ग खोलती है और ऐसा होता हुआ हम सब देख रहे हैं। उदाहरण के लिए यह एक कठोर वास्तविकता है कि हमारी समाज व्यवस्था का आदर्श स्वरूप कालांतर में विकृत हुआ और तथाकथित ऊंचे व नीचे वर्ग की अवधारणा पैदा हुई। समाज में सफाई करने वाला वर्ग उतना ही अछूत था जितना मल विसर्जन के उपरांत मल द्वार धोने के उपयोग में आने वाला हमारा हाथ। जब तक उसको इसके उपरांत धोया नहीं जाये तब तक उससे अन्य वस्तुओं व अंगों को नहीं छूते लेकिन उसे साफ करने के बाद उससे शरीर की आवश्यकता के सभी काम करते हैं, उसे स्थायी रूप से अछूत नहीं बनाते। ठीक यही स्थिति समाज में यह काम करने वालों की थी लेकिन हमारे व्यवस्थाकारों ने उन्हें स्थायी रूप से निम्न घोषित किया और हम भी जाने अनजाने उनके सहायक बने। समाज में यह अमानवीय विकृति स्थायी बन गई और मानवीय गरिमा को इससे गंभीर ठेस पहुंची। नये युग की नयी व्यवस्था में इसकी प्रतिक्रिया हुई और उस प्रतिक्रिया के फलस्वरूप नयी प्रकार की वास्तविकता पनपी जिसे हम हमारे लिए कष्टदायक मानने लगे। आजादी के बाद नयी व्यवस्था के लिए बने दस्तावेज की निर्मात्री सभा ने इस कठोर वास्तविकता का निराकरण करने हेतु ऐसे वर्गों हेतु कुछ विशेषाधिकारों की व्यवस्था की। यह सभा जिसे हम संविधान सभा के नाम से संबोधित करते हैं, किसी वर्ग विशेष की सभा नहीं थी, बल्कि संपूर्ण हिन्दुस्तान के सभी वर्गों का उसमें प्रतिनिधित्व था। उस सभा द्वारा इन विशेषाधिकारों का प्रावधान कोई नयी बात नहीं थी बल्कि हर व्यवस्था में पात्र व्यक्तियों के लिए ऐसे प्रावधान होते आये हैं। इसी कड़ी में हमारे देश की आजादी के बाद की व्यवस्था हेतु बनाये गये संविधान में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि वर्ग बनाये गए और उनके लिए विशेष प्रावधान किए गये। यह भी सही है कि कोई भी संपूर्ण जाति या वर्ग पिछड़ा या अगड़ा नहीं होता लेकिन भारत जैसे विशाल देश के लिए इसका कोई सर्वसमावेशी आधार चुना जाना था और यहां उसके लिए जाति को आधार बनाया गया। इस प्रकार पूर्व की व्यवस्था की विकृति का विकल्प देने के लिए नयी व्यवस्था में आरक्षण, अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण कानून आदि का प्रावधान किया गया। सैद्धांतिक रूप से देखा जाए तो मानवीय गरिमा के प्रति असंवेदनशीलता को व्यवस्थागत स्वरूप देने की विकृति की प्रतिक्रिया में ऐसा होना स्वाभाविक था और इसे सहज भाव से लेना चाहिए। लेकिन यह भी एक कठोर वास्तविकता है कि व्यवस्था अपने आप में कोई उपाय नहीं होती। इसकी सफलता और असफलता उसको लागू करने वालों और उसका उपयोग करने वालों की मनोदशा पर निर्भर करता है। व्यवस्था तो पूर्व में जो बनी थी वह वर्तमान से कहीं अधिक शोधित, परिशोधित, वैज्ञानिक और अनुभूत थी लेकिन व्यवस्थाकारों ने अपने स्वार्थ वश उसका दुरुपयोग किया। ऐसा ही वर्तमान में भी हो रहा है और यह एक कठोर वास्तविकता है कि इस व्यवस्था का भरपूर दुरुपयोग हो रहा है। जो प्रावधान शोषण को रोकने के लिए रक्षात्मक अवधारणा के रूप में बनाये गये थे उनका उपयोग आक्रमण के लिए किया जाने लगा है। इसी का परिणाम है कि ऐसे सभी प्रावधान अब व्यवस्था की विकृति बनकर सामने आने लगे हैं। अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण कानून के उपयोग के बहुत से उदाहरण इसके रक्षात्मक नहीं बल्कि आक्रमणात्मक उपयोग के हैं। हालांकि हमारे समाज के खिलाफ इसका उपयोग समग्र आंकड़ों के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक रूप से कम है लेकिन क्षेत्र विशेष में इनका प्रतिशत कम ज्यादा भी हो सकता है। इस कठोर वास्तविकता के बीच हमारे सामने प्रश्न खड़ा होता है कि हम क्या करें? क्या हमारा सोशल मीडिया पर संपूर्ण अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग के खिलाफ लिखना इसका उपाय है? क्या अखबारों में छपने के लिए सार्वजनिक बयान देना, रैलियां करना, इस विषय को लेकर सभाएं करना इसका उपाय है? क्या हमारा ऐसा करना लाभ की अपेक्षा हानि के मार्ग अधिक नहीं खोलता? लेकिन क्या इसे अपनी नीयति मानकर चुपचाप सहन ही करते जाना चाहिए? किसी के जीवन को किसी सिरफिरे द्वारा किए गए ऐसे आक्रमण के बदले स्वाहा होने दिया जाए? ऐसे ही अनेक प्रश्न हमारे जेहन में तैरते रहते हैं। ऐसे में पहला जबाब तो यही निकल कर आता है कि पूरा का पूरा वर्ग कोई भी खराब नहीं होता। यदि पूरा वर्ग ही ऐसा होता तो वर्षों से गांवों में हमारे साथ रहने वाले इस वर्ग से हमारी स्थायी दुश्मनी हो गई होती और अब तक हर घर से कोई न कोई जेल में होता। जबकि सुखद वास्तविकता यह है कि इस वर्ग के अधिसंख्य लोगों के साथ हमारा पारस्परिक सम्मानजनक व्यवहार है और हम एक दूसरे के सहयोगी हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी

मुंह में राम, बगल में रावण

'मुंह में राम, बगल में छूरी' तो हम सबने सुना है लेकिन यह बगल में रावण कब से होने लग गया, तो आजकल ऐसा ही हो रहा है। इस देश में विगत कई दशकों से राजनीतिक लोगों के मुंह में राम आ गये हैं। जिन राम का नाम लेकर लोग संसार सागर से तर जाते हैं, उन राम के नाम सहारे राजनीतिक लोग राजनीति के दलदल में डुबकी लगाने लगे हैं। वैसे राम नाम की प्रकृति तो डुबाने की नहीं उबारने की होती है लेकिन भारतीय राजनीति में राम के नाम का उपयोग सत्ता के सागर में डूबने के लिए किया जाता है जहां अपरिमित क्षार ही क्षार है। इस प्रकार राजनीतिक दलों के दलदल में राम नाम का उपयोग होने लगा है। कोई राम नाम का उद्घोष करता है तो किसी का इस उद्घोष से जायका बिगड़ जाता है। किसी के लिए यह उद्घोष अपने दल का नारा बन गया तो किसी के लिए यह नारा नकारात्मक बन गया और इस प्रकार बेशर्मी से पवित्र राम नाम को बाजारू बनाकर उसकी महानता को तार तार किया जा रहा है। राम का नाम उन महामानव के प्रति संबोधन है जिनको मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया। जिनके लिए मर्यादा पालन अन्य सभी प्राप्तियों से ऊपर था और उसके लिए वे बड़े से बड़ा त्याग करने को तत्पर रहते थे। वे राम तब राम बन पाये जब उन्होंने मर्यादा पालन के समक्ष सिंहासन को तुच्छ समझा। उन्होंने किष्किंधा को जीत कर सुग्रीव को राजा बनाया। स्वर्णमयी लंका भी उनकी मर्यादा के लिए कोई आकर्षण पैदा नहीं कर सकी इसलिए उन्होंने अथक परिश्रम कर उसे जीतने के बाद भी उसमें प्रवेश तक नहीं किया और विभीषण का राज्याभिषेक करने के लिए भी अपने छोटे भाई लक्ष्मण को भेजा। आज के राजनेता ऐसे महापुरुष के नाम पर येनकेन प्रकारेण सत्ता हासिल करना चाहते हैं और इसीलिए उन्हें मुंह में राम रखने के साथ साथ बगल में रावण रखना पड़ता है। जब चरित्र राम जैसा नहीं हो, राम जैसा बनने का कोई लक्ष्य नहीं हो, राम जैसा बनने के लिए आवश्यक तपस्या का माद्दा न हो तो फिर मुंह पर नाम भले ही राम का रखें लेकिन बगल में रावण रखना ही पड़ता है। जब बगल में रावण रखने की आदत पड़ जाती है तब ही घोषित रूप से शराब बंदी वाले राज्य बिहार में शराब व्यवसायियों को सत्ताधारियों का संरक्षण मिलता है। तब ही राम की बात करने वालों की सेना का नाम 'रावण सेना' हुआ करता है। राम की बात कर विधायक व मंत्री बनने वाले नेताजी के कार्यकर्ता अपने आपको रावण के अनुयायी कहते हुए गौरवान्वित होते हैं। ये रावण सेनाएं उस राज में पनपती हैं जिसके कर्ता धर्ता राम की बात करने वाले बने हैं। यह रावण सेना उनके ही राज में शराब का व्यवसाय कर मजबूत बनती है जो राम का नाम लेकर राज में आये हैं। इन रावण सेनाओं के कर्ता धर्ता उन संगठनों के पदाधिकारी भी बन जाते हैं जो भगवान राम और उनके सेवक बजरंग बली के नाम से लोगों को अपनी और आकर्षित करते हैं। इन रावण सेनाओं के कर्ता धर्ता उन लोगों के राज्य की पुलिस के साथ पार्टियां भी करते हैं जो राम का नाम लेकर राज में आये हैं। ये राम का नाम लेकर राज पाने वाले 5-5 लोगों की खुले आम हत्या को भी छोटी मोटी अपराध की घटना कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं क्योंकि उनको अंजाम देने वाले उन रावण सेनाओं के लोग होते हैं जिन्हें ये बगल में रखा करते हैं। आश्चर्य तो होता ही है जब भारतीयता की बात करने वाले, भारतीय संस्कृति की रक्षा की बात करने वाले, भारतीय मूल्यों की रक्षा की डींगें हांकने वालों के संरक्षण में रावण सेनाएं पनपती हैं। क्या यह हतप्रभ करने वाली बात नहीं है कि रावण जैसी नकारात्मक शक्ति भी किसी की घोषित रूप से प्रेरणा हो और उसको राम की बात करने वाली पार्टी के नेता संरक्षण देवें? राम की बात करने वाली पार्टी जहां सत्ता में हो और वहां का सिस्टम ऐसी रावण सेनाओं के पनपने में सहयोगी बन जाए। उन सेनाओं के पदाधिकारी सार्वजनिक रूप से सोशल मीडिया पर रावण का महिमामंडन करें और फिर भी सिस्टम उससे मेल मिलाप रखता हो। लेकिन यह सब हो रहा है। भगवान बुद्ध की धरती बिहार में हो रहा है। चन्द्रगुप्त की धरती बिहार में हो रहा है। और भी अनगिनत महापुरुष देने वाली धरती बिहार में हो रहा है। हां उस बिहार में जहां राम की बात करने वाली पार्टी पिछले एक दशक से सत्ता सुख भोग रही है और इसीलिए लिखना पड़ रहा है मुंह में राम, बगल में रावण।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बाड़मेर में छात्रों से संवाद

श्री मल्लीनाथ शिक्षण संस्थान बाड़मेर व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 5 अप्रेल को बाड़मेर में पढ रहे स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से संवाद आयोजित किया गया जिसमें राजेन्द्र सिंह आंतरी (IRS) व महेंद्रप्रताप सिंह गिराब (RAS) ने छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री मल्लीनाथ राजपूत महाविद्यालय छात्रावास में आयोजित इस कार्यक्रम में पहले महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से उनके पिछली कक्षाओं में प्राप्तांक व किस क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहते हैं इस संबंध में फॉर्म भरवाये गये। उसी के अनुरूप दोनों अधिकारियों द्वारा बारी बारी से सभी छात्रों से संवाद किया। विद्यार्थियों से अंग्रेजी माध्यम को प्राथमिकता देने, आगामी भर्तियों को ध्यान में रखते हुए दौड़ लगाने व खेल कूद आदि में रुचि लेने के लिए भी बात हुई।

राजपूत समाज जायल की कार्यकारिणी का गठन

विगत 12 जनवरी को जायल में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तृतीय स्थापना दिवस पर एक बैठक रखी गई थी। उसमें क्षेत्र के कुछ जागरूक लोगों ने यहां बने सभा भवन के अधूरे कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाया। सभी ने सहयोग किया और वह भवन तैयार हो गया। उसी भवन में विगत 30 मार्च को समाज के लोगों की बैठक रखी गई जिसमें नयी कार्यकारिणी का गठन किया गया। सभी ने सर्वसम्मति से रामसिंह रोहिणा को अध्यक्ष, गिरधारी सिंह खाटू को उपाध्यक्ष, नरेंद्र सिंह राजोद को सचिव एवं मानसिंह नोखा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। बैठक में सभाभवन के विकास एवं अन्य सामाजिक मुद्धों पर चर्चा की गई। फाउंडेशन के सहयोगी नरेंद्र सिंह राजोद, सुरेंद्र सिंह तंवरा आदि ने फाउंडेशन के कार्यों की जानकारी दी। निवर्तमान अध्यक्ष बालसिंह बोड़िंद ने प्रतिवेदन व लेखा जोखा प्रस्तुत किया।

आयुध नियम 2016 में परिवर्तन हेतु लिखा पत्र

राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा ने राजस्थान के मुख्यमंत्री को पत्र लिख निवेदन किया है कि तलवार, भाला आदि पारंपरिक धारदार हथियार विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अवसरों पर पूजा आदि परंपराओं में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए राजस्थान के आयुध नियम 2016 में संशोधन कर इन पारंपरिक धारदार हथियारों को लाईसेंस से मुक्त किया जाए।

निर्मल कंवर को स्वर्ण पदक

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक दीपसिंह जी बैण्यांकाबास की पौत्री एवं संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास की पुत्री निर्मल कंवर ने अपने महाविद्यालय में स्नातक (ओनर्स) स्तर पर फाईनेंस स्टडीज विषय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इन्हें 9 अप्रेल को आयोजित समारोह में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। संघ परिवार में पली बढ़ी निर्मल कंवर संघ की नियमित स्वयंसेविका है और अपने संपूर्ण शैक्षणिक जीवन में हर सत्र में प्रथम रही है।

पदराड़ा की प्रियदर्शिनी को स्वर्ण पदक

उदयपुर जिले के पदराड़ा गांव के निवासी प्रियदर्शिनी राणावत ने 40वीं नोर्थ जोन शूटिंग चैंपियनशिप में एक स्वर्ण एवं 2 रजत पदक हासिल किए हैं। जयपुर के जगतपुरा शूटिंग रैंज में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रियदर्शिनी ने 10 मीटर एयर रायफल सीनियर वर्ग में 394 अंक हासिल कर स्वर्ण पदक हासिल किया।

गुजरात न्यायिक सेवा में चयन

गुजरात न्यायिक सेवा के हाल ही में घोषित परिणामों में जैसलमेर जिले के पूनमनगर निवासी एवं जैसलमेर में वरिष्ठ अधिवक्ता इन्द्र सिंह भाटी की पुत्री ललिता भाटी का जज के रूप में 9वीं रैंक पर चयन हुआ है। इसी प्रकार जयपुर के सीतारामपुरा निवासी महावीर सिंह चन्द्रावत की पुत्री एकता चंद्रावत पत्नी जितेंद्र सिंह खंगारोत का जज के रूप में चयन हुआ है। इनका ससुराल जोबनेर जिला जयपुर है। समाज अपनी बेटियों की इस उपलब्धि पर गौरवान्वित है।

अभिमन्यु सिंह 'गोडवाड़ रत्न' से सम्मानित

गोडवाड़ विरासत पत्रिका एवं श्री गोड़वाड़ सांस्कृतिक शोध संस्थान द्वारा अभिमन्यु सिंह फालना गांव को 'गोडवाड़ रत्न' सम्मान से 21 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री गोडवाड़ सांस्कृतिक शोध संस्थान के सचिव जितेन्द्रसिंह राठौड़, मानद निदेशक दुगार्दान चारण, कोषाध्यक्ष सुरेशपूरी गोस्वामी उपस्थित थे।

डोरी फाउंडेशन के अध्यक्ष संघशक्ति में

नगवाड़ा, नागौर में जन्मे और मुंबई, पूना व जोधपुर में पले बढ़े डॉक्टर जयवीर सिंह राठौड़ वर्तमान में अमेरिका के फ्लोरिडा स्थित न्यूरोलॉजी विभाग के एपिलेप्सी खण्ड के निदेशक हैं। उन्हें एपिलेप्सी फाउंडेशन ऑफ अमेरिका के डायरेक्टर और एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य बनने वाले पहले भारतीय अमेरिकी का गौरव प्राप्त है। साथ ही वे प्रदेश के मरीजों को ई-कंसल्ट के जरिये परामर्श देने की पहल पर काम कर रहे डोरी फाउंडेशन (डॉक्टर ऑफ राजस्थान इंटरनेशनल) के सह-संस्थापक और अध्यक्ष हैं।

डोरी फाउंडेशन प्रदेश के मरीजों को विदेशों में बैठे नामचीन डॉक्टरों से ई कंसल्ट के जरिये निशुल्क परामर्श देने की पहल पर काम कर रहा है। डॉक्टर जयवीर राठौड़ 31 मार्च को जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में डोरी फाउंडेशन और राजस्थान फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थे। इस दौरान 9 अप्रेल को आप माननीय संघप्रमुख श्री से मिलने संघशक्ति पधारे एवं डोरी फाउंडेशन की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

प्रहलादसिंह चूंडावत ने किया प्री नेशनल क्वालीफाई

उदयपुर निवासी प्रहलादसिंह चूंडावत ने 19वीं राजस्थान शूटिंग चैंपियनशिप में क्वालीफाई कर प्री नेशनल में प्रवेश पाया है। गजेन्द्रसिंह राणावत के निरीक्षण में प्रशिक्षण ले रहे प्रहलादसिंह ओप्टिकल व्यवसायी हैं।

बालिका छात्रावास में होली पर्व

सीकर के निकट नाथावतपुरा में स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित मीरा छात्रावास में होली के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रावास के अधीक्षक का दायित्व संभाल रहे वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावरसिंह भादला ने बालिकाओं को होली का महत्व बताते हुए हमारे जीवन में एक निष्ठता एवं प्रभु स्मरण का महत्व बताया। बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया एवं धुलंडी के दिन एक दूसरे को रंग लगाकर शुभकामनाएं दी।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

पतन को रोकने का मार्ग है श्री क्षत्रिय युवक संघ- बैण्यांकाबास

(पृष्ठ 3 से लगातार)

प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत 30 जुलाई को कातर में मनाई जाने वाली नारायण सिंह जी रेड़ा की जयन्ती तथा 16 अगस्त को लाडनूं में प्रस्तावित श्री राव चंद्रसेन जयन्ती के सम्बंध में जानकारी प्रदान की। जय सिंह सागु बड़ी ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के बारे में उपस्थित समाजबंधुओं को बताया। इसी प्रकार 8 अप्रैल को डीडवाना के सिंघाना गांव में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी, जय सिंह सागु बड़ी, मोहन सिंह प्यावां तथा विनोद सिंह बरांगणा ने कार्यक्रम को संबोधित किया। मध्य गुजरात संभाग के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत में 29 मार्च को काणेटी गांव स्थित प्राथमिक शाला में मासिक बैठक का आयोजन किया गया। संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी की उपस्थिति में सम्पन्न बैठक के दौरान हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत आयोजित हो रही गतिविधियों की समीक्षा की गई तथा आगे के लिए कार्ययोजना बनाकर स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए। अप्रैल व मई माह में अहमदाबाद जिले के 45 गांवों में हीरक जयन्ती के प्रचार हेतु संपर्क अभियान चलाने का निर्णय हुआ। खेड़ा जिले के रढ़ू, देवा और मलातज गाँवों में तीर्थदर्शन कार्यक्रम की भी योजना बनाई गई। प्रांतप्रमुख जगतसिंह वलासना सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। गुजरात में ही 22-28 मार्च तक साणंद तहसील के सात गांवों में लगातार सात दिनों तक संघ तीर्थदर्शन के कार्यक्रम रखे गए। 22 मार्च को रैथल गांव स्थित फार्म हाउस में संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 23 मार्च को मोडासर गांव स्थित श्री रामजी मंदिर में कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें बटुक सिंह काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 24 मार्च को वासणा गांव में दरबारी डेली पर कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें हितेंद्र सिंह खोडा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 25 मार्च को खोडा गांव में आयोजित कार्यक्रम में रणजीतसिंह वासणा

ने उपस्थित समाजबंधुओं को हीरक जयन्ती वर्ष की जानकारी दी। इसी प्रकार 26 मार्च को गरोडिया गांव स्थित श्री स्वामीनारायण मंदिर में बटुक सिंह काणेटी की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 27 मार्च को गोधावी गांव स्थित महादेव मंदिर में कार्यक्रम आयोजित हुआ तथा 28 मार्च को चेखला गांव में तीर्थदर्शन कार्यक्रम रखा गया। दोनों स्थानों पर अरविंद सिंह काणेटी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उपरोक्त सातों कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य, कार्यप्रणाली, गतिविधियों आदि की जानकारी प्रदान की गई तथा हीरक जयन्ती वर्ष के सम्बन्ध में बताया गया। बनासकांठा प्रान्त में थराद तहसील के भोरडू, उदराणा, राह, डुवा, ऊटवेलिया गांवों में 28 मार्च को संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर तथा सिद्धराज सिंह पीलूड़ा, अरविंदसिंह नारोली, शैलसिंह वलादर, गजेंद्र सिंह नारोली आदि सहयोगी उपस्थित रहे। संपर्क यात्रा के दौरान समाजबंधुओं को संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली तथा हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। भाल प्रान्त के अंतर्गत बावलियारी गांव में भी संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम 25 मार्च को आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह धोलेरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मध्य गुजरात संभाग के अंतर्गत विरमगाम तहसील के वांसवा गांव में 4 अप्रैल को संघ तीर्थदर्शन का आयोजन किया गया। योगेन्द्र सिंह कानेटी ने पूज्य तनसिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया। संभागप्रमुख दीवान सिंह कानेटी ने कहा कि संघ व्यक्ति निर्माण द्वारा समाज के उज्ज्वल भविष्य का आधार तैयार कर रहा है। हम सब को इस महान संस्था के हीरक जयन्ती वर्ष में सहभागी बनने का सुअवसर मिल रहा है, इसका हमें पूरा लाभ उठाकर पूरे वर्ष उत्साहपूर्वक कार्य करना है। देवेंद्र सिंह कानेटी ने कार्यक्रम का संचालन किया। बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत दांतीवाड़ा तहसील के पांथावाड़ा, आरखी तथा धनियावाड़ा गांवों में 4 अप्रैल को संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर, ईश्वर सिंह आरखी, ईश्वर सिंह, महिपाल सिंह, अभय सिंह पांथावाड़ा, पृथ्वीसिंह, बलवंत सिंह धनियावाड़ा सहित उपस्थित रहे। इस दौरान समाजबंधुओं से हीरक जयन्ती के बारे में चर्चा की गई। 7 अप्रैल को दांतीवाड़ा तहसील के गुंदरी, सातसण और आकोली गांवों में भी संपर्क यात्रा का आयोजन हुआ जिसमें ईश्वर सिंह आरखी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 11 अप्रैल को जयपुर के कनकपुरा स्थित मरुधर डिफेंस स्कूल में भी हीरक जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में स्नेहमिलन का आयोजन हुआ जिसमें संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने कहा कि देश की स्वतंत्रता के समय क्षत्रिय समाज की स्थिति को देखकर पूज्य तनसिंह जी ने भविष्य में आने वाली परिस्थितियों को समझ लिया था और उसके लिए समाज को तैयार और मजबूत करने के लिए 1946 में ही संघ की स्थापना कर दी थी। वे जानते थे कि बिना संस्कारों के, बिना नैतिक व सामाजिक मूल्यों के लोकतंत्र का लाभ समाज व राष्ट्र को नहीं मिल सकता। इसीलिए संघ द्वारा संस्कार निर्माण का कार्य उन्होंने प्रारम्भ किया है जिसको 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हम हीरक जयन्ती वर्ष मना रहे हैं। इसी दिन बाड़मेर संभाग के गुड़ामालानी प्रान्त के राणासर गांव में भी संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह जी गेहूं ने कहा कि आज क्षत्रिय स्वधर्म पालन से विमुख हो गया है, अपने कर्त्तव्य को भूल गया है। संघ अपने शिविरों, शाखाओं, स्नेहमिलन आदि के माध्यम से हमें अपने कर्त्तव्य की याद दिला रहा है। प्रान्तप्रमुख गणपतसिंह बूठ ने हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत आयोजित हो रही गतिविधियों के बारे में बताया। राणासर में सितंबर 2009 और अगस्त 2009 में संघ के शिविर आयोजित हो चुके हैं। राणासर के अतिरिक्त बूठ, बूल, खारी, गंगासरा आदि गांवों के समाजबन्धु भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 11 अप्रैल को चौहटन प्रान्त के गोहड़ का तला में भी संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रान्त प्रमुख उदय सिंह देदूसर ने कहा कि आज समाज में संस्कार निर्माण के कार्य की अत्यधिक आवश्यकता है और इस कार्य को केवल संघ ही अपनी सामूहिक संस्कारमयी कार्यप्रणाली के माध्यम से कर रहा है। कार्यक्रम में चौहटन, गोहड़ का तला, बावड़ी, आगिनशाह का तला, शहीद का तला, देदूसर, आकोड़ा, दुधवा, गंगाला आदि स्थानों से समाजबन्धु उपस्थित रहे। नागौर सम्भाग के नागौर प्रान्त में भी इसी दिन निम्बोडा फांटा स्थित ग्रामीण स्वाभिमान संस्थान के सभागार में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। विक्रम सिंह ढींगसरी, जय सिंह सागु बड़ी, उगमसिंह गोकुल, सुरेंद्र सिंह तंवरा, नरेंद्र सिंह राजोद ने अपने विचार व्यक्त किए। ग्रामीण स्वाभिमान संस्थान, निम्बोडा के अध्यक्ष रामधन जी पोटलिया को यथार्थ गीता भेंट की गई। निम्बोडा, तंवरा, झाड़ेली, छापड़ा आदि गांवों से समाजबन्धु उपस्थित रहे। 11 अप्रैल को ही जोधपुर संभाग के ओसियां प्रान्त का प्रान्तीय स्नेहमिलन राजपूत छात्रावास, ओसियां में संभागप्रमुख चंद्रवीर सिंह देणोक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

मालवा का परमार वंश

भारत वर्ष में हर युग, हर काल में ऐसे अनेक महापुरूष हुए है, ऐसी विभूतियां हुई है जिन्होंने अपने कृतित्व से ना केवल उस युग को प्रकाशित किया वरन् आने वाले सभी युगों के लिए कुछ मापदण्ड स्थापित कर गए, उनकी कीर्ति के सौरभ से धरा हमेशा महकती रहती है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में ऐसे ही एक महानायक हमारे समाज के गौरव राजा भोज हुए हैं। भोज की उपलब्धियों ने ना केवल हमें गौरवान्वित किया वरन् संस्कृति के सौन्दर्य को भी और सुन्दर बनाया। भोज का जन्म परमार वंश में हुआ, भोज मालवा के परमार वंश के सबसे प्रतापी शासक थे। मुंज के बाद मालवा के परमार वंश की प्रतिष्ठा धूमिल हो गई जिसे भोज ने अपने पराक्रम से प्रकाशित किया। अपने पिता सिन्धुराज की मृत्यु के बाद मात्र 15 वर्ष की आयु में भोज शासक बना। विपरीत परिस्थितियों से विचलित ना होते हुए भोज ने शीघ्र ही अपने राज्य को आन्तरिक व बाहरी शत्रुओं से संघर्ष के लिए सुसंगठित व सुदृढ़ कर लिया। भोज ने अनेक युद्ध किए और उनमें विजय प्राप्त कर अपनी सैन्य कुशलता से शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न किया। भोज ने चालुक्य भीमदेव प्रथम, कलचुरि गागेयदेव, कर्णाट के जयसिंह को परास्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। भोज ने मुस्लिम आक्रमणकारियों को भी परास्त किया। एक विजेता होने के साथ-साथ भोज विद्यानुरागी और विद्वानों का आश्रयदाता था जिसमें संबंधित अनेक कथाएं भारतीय जनमानस को आज भी प्रसन्नता व गौरव का अनुभव करवाती है। भोज स्वयं अनेक विषयों के प्रकाण्ड विद्वान थे जिनका पता उनके द्वारा रचित विभिन्न विषयों के ग्रन्थों से चलता है। भोज द्वारा रचित युक्तिकल्पतरू एक अद्वितीय ग्रन्थ है जिसमें अनेक विषय समाहित है जैसे-राजनीति, वास्तु, रत्नपरीक्षा, नौका शास्त्र विभिन्न प्रकार की चिकित्सा विधियां आदि। इसके अतिरिक्त काव्य शास्त्र पर श्रृंगार प्रकाश, व्याकरण पर शब्दानुशासन, दर्शन पर तत्व प्रकाश, श्रृंगारमंजरी, भोज चम्पू आदि अनेक ग्रन्थ भोज की विद्वता का प्रमाण है। भोज के दरबार में अनेक विद्वान आश्रय पाते थे जिनमें भास्कर भट्ट, दामोदर मिश्र, धनपाल प्रमुख थे। भोज महान निर्माता भी था। कहा जाता है कि वर्तमान भोपाल नगर भी भोज द्वारा निर्मित था जहां भोज का बनाया भोज सागर भोज की कीर्ति आज भी बता रहा है। भोज ने अनेक महलों व मंदिरों का निर्माण करवाया जिनमें धारा नगरी का सरस्वती मंदिर उल्लेखनीय है। धारा नगर कला और विद्या का प्रमुख केन्द्र बन गया था। विद्या के प्रचार प्रसार के लिए भोज ने धारा में एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की, उस पाठशाला में इतिहास, नाटक, साहित्य के अनेक ग्रन्थ पत्थर की बड़ी-बड़ी शिलाओं पर उत्कीर्ण थे। कालान्तर में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने उसे नष्ट कर दिया। भोज की दानशीलता के अनेक जनश्रुतियां प्रसिद्ध हैं कहा जाता है कि भोज कवियों को उनके हर एक श्लोक पर एक लाख मुद्राएं प्रदान करता था, इसीलिए जब तक भोज जीवित थे तो कहा जाता था-

अद्य धारा सदाधारा, सदालम्बा सरस्वती।
पण्डिता मण्डिताः सर्वे भोजराजे भूवि स्थिते।।

(आज जब भोजराजा इस धरती पर है तो धरा नगरी सदाधारा (अच्छे आधार) वाली है, सरस्वती को आलम्ब मिला हुआ है, सभी पण्डित आदृत है।)

भोज की मृत्यु पर विद्धानों ने कहा-

अद्य धारा निराधारा निरालंबा सरस्वती।
पण्डिताः खण्डिताः सर्वे भोजराजे दिवंगते।।

(आज भोजराज के चले जाने से धारा नगरी निराधार हो गई है, सरस्वती बिना आलम्ब की हो गई है और सभी पण्डित खंडित हो गए है।)

(पृष्ठ एक का शेष)

मधुबनी... आखिर ऐसा क्यों? यह प्रश्न हमारे सबके जेहन में स्वाभाविक रूप से उठना चाहिए और उसका उत्तर भी खोजना चाहिए। खोजेंगे तो पायेंगे कि किस प्रकार एक वर्ग विशेष द्वारा हमारे खिलाफ माहौल बनाया गया, कैसे समाज के सभी वर्गों में हमारे खिलाफ जहर भरा गया और वही वर्ग आज मुख्य धारा के मीडिया का कर्ता धर्ता है। उसके लिए 5 राजपूतों की मौत एक स्थानीय घटना होती है लेकिन हमारे खिलाफ माहौल बनाने में सहायक घटना राष्ट्रीय समाचार बन जाती है। आश्चर्य यह है कि हम आज भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से इस वर्ग को मजबूती प्रदान करने का साधन बन जाते हैं और हमें पता ही नहीं चलता कि हम जिनको आगे बढ़ा रहे हैं उनके अंतर में हमारे प्रति कितना जहर भरा पड़ा है और वही जहर विभिन्न रूपों में हमारे अस्तित्व पर चोट किए जा रहा है। हम कभी सामाजिक न्याय के नारे तले इस वर्ग के अनुगामी बनते हैं तो कभी राष्ट्र और संस्कृति के नाम पर। कभी यह वर्ग वामपंथी बनकर हमारे अंतर के प्रतिकारी स्वभाव का उपयोग करता है तो कभी दक्षिण पंथी बनकर संस्कृति के प्रति हमारी सम्मान भावना का शोषण करता है और हम एक साधन के रूप में प्रयुक्त होते रहते हैं। मधुबनी के महमदपुर गांव की यह घटना हमें निश्चित रूप से सोचने को मजबूर करती है कि चंद छोटे छोटे स्वार्थों के वशीभूत हुए हम कब तक दूसरों के हाथ की कठपुतली बन उनके लिए उपयोग होते रहेंगे। अब हम इस आलेख के शीर्षक के शेष अंग सोशल मीडिया की बात करते हैं। तकनीक के विकास ने हमें अनेक साधन उपलब्ध करवाये हैं जो परंपरागत साधनों के विकल्प बनकर उभरे हैं। ऐसा ही एक साधन सोशल मीडिया है जिसके विरोध में हजारों बातें की जा सकती हैं लेकिन इसकी उपयोगिता को भी नकारा नहीं जा सकता। इस घटना में भी सोशल मीडिया ने मुख्यधारा मीडिया का विकल्प बन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। उन युवाओं को साधुवाद दिया जाना चाहिए जिन्होंने अपने स्तर पर इस घटना की सच्चाई दुनियां के सामने लाने का बीड़ा उठाया और उन्होंने यह कर दिखाया। लगातार उस गांव और परिवार की स्थिति से सब लोगों को अवगत करवाया, परिवार की वास्तविकता से लोगों को अवगत करवाया, घटना की वास्तविकता से लोगों को अवगत करवाया। जिस घटना की जानकारी को मुख्य धारा के मीडिया ने गांव से बाहर निकालना उचित नहीं समझा, सोशल मीडिया पर सक्रिय हमारे समाज के युवाओं ने उसे राष्ट्रीय पटल पर चर्चा का विषय बना दिया। जिस घटना के घटना स्थल का मुआयना करने स्थानीय पुलिस अधीक्षक तक नहीं गये वहाँ विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता एवं सरकार के मंत्री तक पहुंचने लगे, यह सोशल मीडिया की ताकत के बल पर बने माहौल का ही असर है। केवल बिहार ही नहीं बल्कि बाहर के राज्यों से भी लोग वहाँ पहुंच कर पीड़ित परिवार के साथ खड़े दिख रहे हैं यह सोशल मीडिया में सक्रियता का ही परिणाम है। इस घटना को छोटा मोटा अपराध कहने वाले सत्ताधारी दलों को प्रेसवार्ता कर अपना पक्ष रखने को मजबूर इसी ताकत ने किया। इससे यही सिद्ध होता है कि साधन कोई भी हो अपने आप में अच्छा या बूरा नहीं होता बल्कि उसका उपयोग किस रूप में, किस लक्ष्य से, किसके द्वारा किया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण है।

लेकिन हमारे लिए यह विचारणीय अवश्य होना चाहिए कि क्यों वर्तमान व्यवस्था और उसके नियामकों के लिए राजपूत की मौत कोई महत्व नहीं रखती? क्यों हाथरस में कैंप करने वाले राहुल गांधी और प्रियंका गांधी महमदपुर जाने को लालायित नहीं होते? क्यों वे पुलिस का घेरा तोड़कर पैदल मार्च करने को कदम नहीं उठाते? वे तो जैसे उत्तरप्रदेश में विपक्षी पार्टी हैं वैसे ही बिहार में भी विपक्षी पार्टी ही हैं। फिर किसी राजपूत परिवार के अधिकांश पुरुष सदस्यों की निर्मम हत्या पर उन्हें अपना विपक्ष धर्म याद नहीं आता। सत्ताधारी दल का तो कहना ही क्या? उनके नेता तो मीडिया में आकर बोलते हैं कि अपराध नहीं होंगे तो पुलिस, वकील और कोर्ट क्या करेंगे। सत्ता में भागीदार भाजपा के बड़े नेता और पूर्व उप मुख्यमंत्री की चिंता का विषय राजपूतों की मौत नहीं बल्कि राजद नेता तेजस्वी यादव की सक्रियता है। वे यह याद दिला रहे कि राजद ने राजपूतों के साथ क्या किया पर यह नहीं बता रहे कि वर्तमान में उनकी सरकार के रहते राजपूतों के साथ क्या हो रहा है? कुल मिलाकर पूरा परिदृश्य यह बयां कर रहा है कि राजपूत किसी के लिए मायने नहीं रखता और कारण ढूंढने जायेंगे तो पायेंगे कि राजपूत स्वयं के लिए राजपूत मायने नहीं रखता। जब तक यह स्थिति नहीं सुधरेगी तब तक इन परिस्थितियों में कोई बड़ा बदलाव संभव नहीं है। इसलिए आयें उस प्रक्रिया में शामिल होवें जो हमारे जीवन का केन्द्र समाज को बनाती है।

खिरजां खास व दलपतनगर में रूढियों के खिलाफ प्रस्ताव

शेरगढ़ क्षेत्र के खिरजां खास व दलपतनगर के समाजबंधुओं ने होली स्नेहमिलन का आयोजन किया। स्नेहमिलन में सगाई, विवाह एवं मृत्युपरांत होने वाले समारोहों में अफीम, शराब आदि के सेवन की रूढि को प्रतिबंधित करने का प्रस्ताव पारित किया गया। ऐसे सभी समारोहों में इनकी मनुहार बंद करने का निर्णय लिया गया एवं इस निर्णय का उल्लंघन करने वालों से दंडस्वरूप 51000 रुपये वसूलने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया एवं ऐसे लोगों का सहयोग करने वालों से भी 11000 रुपये वसूलने का निर्णय लिया गया। दंड स्वरूप प्राप्त राशि को गौशाला में देने का भी निर्णय लिया गया।

(पृष्ठ चार का शेष)

व्यवस्थागत.... जरा विचार करें कि जब हम इस वर्ग के कुछ सिरफिरे लोगों के कृत्यों के कारण सार्वजनिक रूप से पूरे वर्ग के खिलाफ लिखते हैं तो क्या हमारे जेहन में वे अधिकांश लोग आते हैं जिनका सौहार्द एवं सहयोग हमें मिलता रहा है। इसलिए इस कठोर वास्तविकता का, कि इस कानून का दुरुपयोग होता है, पहला उपाय यही है कि हमें इस पूरे वर्ग को दोष देने की अपेक्षा उस व्यक्ति को दोषी मानना चाहिए जिसने यह किया है। साथ ही हमें दोहरी जिम्मेदारी निभाते हुए यह भी प्रयास करना चाहिए कि उन सिरफिरे लोगों से हमें ही नहीं बचना बल्कि वर्षों से हमारे साथ रह रहे इस वर्ग के उन लोगों को भी बचाना है जो हमारे प्रति सद्भावी हैं। जब हम पूरे वर्ग का विरोध करते हैं तो ऐसे सद्भावी लोगों में भी हमारे प्रति नकारात्मकता पैदा होती है और उन सिरफिरे लोगों को इन सद्भावियों में से और अधिक सिरफिरे तैयार करने का अवसर मिलता है इसलिए हमारी दोहरी जिम्मेदारी में से पहली इस सद्भाव का सम्मान करना है, इन सद्भावियों को सिरफिरों के प्रभाव से बचाना है। हमारी दूसरी जिम्मेदारी हमें आपको बचाने की है। हमारी स्थिति ऐसी परिस्थितियों में उस खरबूजे की सी हो जाती है जो चाहे स्वयं चाकू पर गिरे अथवा चाकू खरबूजे पर गिरे, कटना खरबूजे को ही होता है। ऐसे में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होने पर सावधानी एवं विवेकशील तरीके से उनसे निपटना पड़ेगा और वह उस घटना की प्रकृति और समय की परिस्थितियों पर ही निर्भर करता है। हमारे पूर्वज इससे भी विकट परिस्थितियों में अपने विवेक और जीजीविषा के बल पर उनसे पार पाते रहे हैं और उनका गौरवशाली इतिहास हमारे लिए एक श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में मौजूद है। ऐसी परिस्थितियों का एक सर्वमान्य उपाय तो यही है कि ऐसी किसी भी घटना को समाज बनाम समाज बनने से रोका ही जाना चाहिए क्योंकि ऐसा नहीं होने पर नुकसान सदैव हमारा ही होता है। शासन, प्रशासन, राजनेता, मीडिया आदि सभी की सहानुभूति घटना के समाज बनाम समाज बनते ही सामने वाले पक्ष की तरफ हो जाती है। उन वर्गों के वे सिरफिरे नेता प्रयास करेंगे कि यह समाज बनाम समाज बने लेकिन हमें संयम और समझदारी का सहारा लेना चाहिए। इसका एक स्थायी उपाय यह हो सकता है कि इस व्यवस्था में ही बदलाव किया जाए लेकिन यह कहने में जितना सरल है, होने में उससे बहुत अधिक कठिन है। यह बात हमें बहुत लुभावनी लगती है और हम आसानी से इस बात के पीछे लामबद्ध हो जाते हैं लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है। वर्तमान व्यवस्था में हर राजनीतिक दल अपने आपको इन वर्गों का हितैषी दिखाना चाहता है इसलिए व्यक्तिगत बातचीत में इसे विकृति मानते हुए भी किसी भी दल का कोई भी व्यक्ति इनकी नाराजगी का खतरा नहीं लेगा। जिस राजनीतिक दल को हम हमारा हितैषी मानते थे, उसने तो इस व्यवस्था को और अधिक कठोर ही बनाया है, यह हम देख चुके हैं। फिर किसी भी व्यवस्था को विकृत होने से बचाने का एक ही उपाय है कि हम उस व्यवस्था के नियामक बनें, उसमें प्रभावी भूमिका हासिल करें और उस विकृत्ति की मारक क्षमता को न्यूनतम करने का प्रयास करें। वर्तमान प्रणाली में उसके लिए बहुसंख्यक वर्ग का समर्थन चाहिए। इस दृष्टिकोण से भी यदि **हम किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के समूह के कारण पूरे वर्ग के खिलाफ माहौल बनायेंगे तो समाज रूप में हमारा ही समर्थन कम होगा और व्यवस्था में हमारी भागीदारी कम होती जाएगी। हमारे विरोधियों की भागीदारी बढ़ती जाएगी और परिणामस्वरूप व्यवस्था के प्रावधानों का हमारे विरुद्ध और अधिक उपयोग होगा जैसा अभी तक होता आया है।** कुछ लोग बाहुबल का उपयोग करने को उतारु नजर आते हैं लेकिन वर्तमान व्यवस्था में इसके दूरगामी परिणाम हमारे खिलाफ ही जाते हैं। इसकी पुष्टि हम ऐसी घटनाओं की केस स्टडी करें तो हो जाएगी। इसलिए हमें व्यवस्था की इन कठोर वास्तविकताओं को स्वीकार कर उसी के अनुरूप संतुलित व्यवहार करना चाहिए लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम अत्याचार सहन करते जाएं बल्कि इसका अर्थ यही है कि अत्याचार का प्रतिकार ऐसा हो जिसमें न्यूनतम हानि और अधिकतम लाभ की संभावना हो।

मुंह में राम... यदि हम नहीं जागे, राम की संतानें नहीं जागीं, उन्होंने अपने विवेक का समुचित इस्तेमाल नहीं किया तो हम इनके बगल को देखे बिना केवल मुंह को देखते रहेंगे और बगल में रावण पैदा होते रहेंगे और राक्षसी संस्कृति पनपती रहेगी। इसलिए केवल रोना रोने से कुछ नहीं होना, किसी एक घटना पर हाय तौबा मचाकर फिर गहरी निद्रा में सो जाने से भी कुछ नहीं होना बल्कि रामत्व के विस्तार के स्थायी उपायों में सहभागी बनना पड़ेगा। अपनी क्षमताओं का केवल अपने लिए उपयोग करने की अपेक्षा उन्हें रामत्व की प्रवृत्ति के हवाले करना पड़ेगा। अपनी समझ को किसी श्रेष्ठ समझ का अनुगामी बनाना पड़ेगा। समर्पण के साथ अनुगामी बनना पड़ेगा क्योंकि की रावण का प्रतिकार और विनाश राम बनने से ही संभव है, हनुमान बनने से ही संभव है। लक्ष्मण जैसा भाई भी बनना पड़ेगा तो अंगद जैसा उत्साही भी होना पड़ेगा। सुग्रीव जैसी मित्रता भी चाहिए तो जामवंत जैसी बुद्धिमत्ता भी। इसके अलावा कोई उपाय नहीं है रामत्व के विस्तार का और रामत्व के विस्तार के बिना रावण की सेना के विनाश की बातें केवल बातें हैं और केवल बातों से क्या होना है?

परबतसिंह गोहिल का देहावसान

परबतसिंह गोहिल

गुजरात के घोघा विधानसभा क्षेत्र से पूर्व विधायक एवं गोहिलवाड़ राजपूत समाज के पूर्व प्रमुख **परबतसिंह जी गोहिल** का 3 अप्रेल को देहावसान हो गया। उखरला निवासी परबतसिंह की पहचान एक उम्दा समाज सेवी के रूप में थी। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिवार को इस विछोह को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

गंगासिंह अलाय का देहावसान

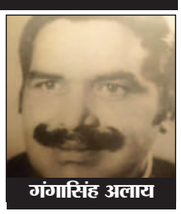
गंगासिंह अलाय

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **गंगासिंह अलाय** का देहावसान हो गया। आप संघ के प्रारंभिक काल में संपर्क में आए थे एवं आपका पहला उ.प्र.शि.मई 1949 में था। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

महेंद्र सिंह धमोरा को मातृशोक

श्रीमती कृष्णा कुमारी

विगत दिनों स्वर्गस्थ हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक सज्जन सिंह धमोरा की धर्मपत्नी **श्रीमती कृष्णा कुमारी जोधी** जी का 30 मार्च को देहावसान हो गया। इनके पुत्र महेंद्र सिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

जौहर श्रद्धांजलि समारोह संपन्न

जौहर स्मृति संस्थान चितौड़गढ़ द्वारा प्रतिवर्ष की भांति जौहर श्रद्धांजलि समारोह (जौहर मेला) का गरिमामय आयोजन 7 अप्रैल 2021 तद्नुसार चैत्र कृष्णा ग्यारस को दुर्ग स्थित जौहर स्थली पर किया गया। कोरोना संक्रमण के कारण इसे कोविड गाइडलाइन के अनुरूप व्यापक स्तर पर आयोजित नहीं कर सांकेतिक रूप से आयोजित किया गया समारोह के प्रारंभ में यज्ञ समिति के संयोजक गंगा सिंह साजियाली, देवेंद्र सिंह, पंडित कमलेश भट्ट एवं डॉ सीमा श्रीमाली के निर्देशन में हवन किया गया। इससे पूर्व संस्थान की ओर से प्रातः7 बजे गांधी नगर स्थित जौहर भवन में अखंड ज्योति मंदिर मे पूजा अर्चना की गई। तदुपरांत संस्थान के पदाधिकारी गण विभिन्न समितियों के सदस्य एवं अतिथियों द्वारा भोईखेड़ा स्थित गोरा बादल पैनोरमा पर पूजा की गई, राणा सांगा बाजार में राणा सांगा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया, पाडनपोल स्थित रावत बाघसिंह जी की प्रतिमा पर पूजा की गई, भैरवपोल स्थित वीरवर जयमल जी, कल्ला जी, मां नागणेचा जी की पूजा अर्चना हुई। इसके बाद हनुमान मंदिर, रामदेव मंदिर, राम जानकी मंदिर, वीरवर फताजी स्मारक, मां बायण जी, अन्नपूर्णा जी मंदिर, भगवान चारभुजा नाथ मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर, मां कालिका मंदिर में पूजा अर्चना करते हुए विजय स्तंभ के समीप जौहर स्थली पर पहुंचे जहां यज्ञ के उपरांत

पुष्पांजलि, श्रद्धांजलि कार्यक्रम संपन्न हुआ। इससे एक दिन पूर्व जौहर स्मृति संस्थान के तत्वाधान में आयोजित 29 वीं महाराणा सांगा स्मृति पारंपरिक ग्रामीण एवं जनजातीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ इंदिरा गांधी स्टेडियम में सायंकाल 5 बजे किया गया' समिति के सह संयोजक दलपत सिंह चुंडावत ने बताया कि इस वर्ष भी प्रतियोगिता खंडित नहीं हो इसलिए अतिथियों द्वारा खेल मैदान में भाला फेंक कर इसे जारी रखा गया।

पुस्तकों का विमोचन- जौहर श्रद्धांजलि समारोह के अवसर पर जौहर साका स्मारिका, बीजोगण शतक, साइनिंग मेवाड़ पाक्षिक का विमोचन स्थानीय विधायक चंद्रभान सिंह आक्या, पूर्व सांसद हेमेंद्रसिंह बनेड़ा, भाजयुमो जिलाध्यक्ष हर्षवर्धनसिंह रूद, संस्थान अध्यक्ष तख्तसिंह फाचर ने किया।

मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास का वार्षिकोत्सव संपन्न

बाडमेर के मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास का वार्षिकोत्सव एवं उच्चतम कक्षा का विदाई समारोह 4 अप्रेल (रविवार) को संपन्न हुआ। प्रतिवर्ष की भांति समारोहपूर्वक मनाये गए कार्यक्रम का प्रारंभ करते हुए छात्रावास के आधार स्तंभ एवं वयोवृद्ध शिक्षाविद कमलसिंह जी चूली ने कहा कि छात्र जीवनपर्यंत मेहनत के साथ संघर्ष जारी रखें। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय कर सेवा के अधिकारी राजेंद्र सिंह शेखावत (आंतरी) ने कहा कि यह छात्रावास अपने आप में अनुठा संस्थान है। यहां छात्रों को पढाई के साथ साथ मूल्यों का पाठ पढाया जाता है जिनका प्रकटीकरण इस छात्रावास से निकले विद्यार्थियों के जीवन के माध्यम से समाज में हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इतिहास वर्तमान का आधार नहीं बन सकता लेकिन वह वर्तमान की प्रेरणा होता है और वही प्रेरणा हमें परिस्थितियों से संघर्ष कर कुछ कर गुजरने को प्रेरित करती है। प्रतिभा के साथ कठिन परिश्रम आवश्यक है और यदि प्रतिभा कम है तो परिश्रम अधिक करना पड़ेगा इसलिए परिश्रम और संघर्ष से सब संभव है और वह जीवन में अंत तक जारी रखना पड़ता है। विकट परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करने वाला ही सफल माना जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं इसी छात्रावास के पूर्व विद्यार्थी रह चुके महेन्द्रप्रताप सिंह गिराब ने अपने छात्रावास जीवन के अनुभव सुनाते हुए कहा कि वह समय एवं आदरणीय कमलसिंह जी का तत्कालीन मार्गदर्शन उनके वर्तमान जीवन का निर्धारक बना। उन्होंने कहा कि परीक्षाओं के अंक अधिक मायने नहीं रखते बल्कि लक्ष्य के प्रति समर्पण के साथ की गई मेहनत मायने रखती है। अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनके छात्र जीवन का शैक्षणिक रिकॉर्ड अच्छा नहीं होने के बावजूद उन्होंने प्रतियोगी परीक्षाओं में श्रेष्ठ परिणाम दिया इसलिए हर परिस्थिति में अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि के रूप में शिव उपखंड अधिकारी महावीर सिंह जोधा ने कहा कि सकारात्मक सोच के साथ आगे बढने की भावना ही सफलता दिलाती है। स्वयं की क्षमताओं को पहचान कर तद्नुसार योजना बनाकर प्रयास करें, छात्रावास में सीखे अनुशासन को जीवन का हिस्सा बनायें। विशिष्ट अतिथि की भूमिका का निर्वहन करते हुए पुलिस उपाधीक्षक एवं छात्रावास के पूर्व छात्र भवानी सिंह मूंगेरिया ने अपने छात्रावास जीवन के अनुभव बताते हुए कहा कि अनुशासन ही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है और वह पूंजी उन्होंने इस छात्रावास में रहते आदरणीय कमलसिंह जी से पायी। छात्र जीवन की मेहनत ही आगे प्रगति का आधार बनती है। जीवन में कभी नकारात्मकता को हावी न होने देवें क्योंकि सकारात्मक सोच ही सफलता की कुंजी है। कार्यक्रम के प्रारंभ में व्यवस्थापक महिपाल सिंह चूली ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं अंत में संस्थान के अध्यक्ष रावत त्रिभुवन सिंह ने सबका आभार जताया। कार्यक्रम में प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित किया गया। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी महेन्द्रप्रताप सिंह ने छात्रावास में पुस्तकालय के लिए एक लाख रुपये भेंट किए।

गोठड़ा में होली स्नेहमिलन

शेखावाटी प्रांत में नवलगढ़ तहसील के गोठड़ा ग्राम में नवलगढ़ तहसील के समाज बंधुओं का होली स्नेह मिलन कार्यक्रम 4 अप्रेल को संपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में गोठड़ा निवासी मांगू सिंह जी गोठड़ा ने ग्राम गोठड़ा का इतिहास बताते हुए बताया कि सातवीं सदी में ठाकुर भीम सिंह जी के पुत्र हिंदू सिंह जी मंडावा से गोठड़ा आये थे। उन्होंने गोठड़ा में के वीर योद्धाओं व झुंझारो का परिचय दिया। करणी सिंह की गिरावड़ी के द्वारा राजपूत समाज सेवा समिति का परिचय दिया गया, उसके द्वारा किए जा रहे कार्य की समीक्षा की गई। यशवर्धन सिंह जी झेरली ने क्षत्रिय की सार्थकता बताते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया। इस वर्ष श्री क्षत्रिय युवक संघ हीरक जयंती वर्ष मनाने जा रहा है जिसमें सभी समाज बंधुओं से सहयोगी बनने और सभी से इस कार्यक्रम में शामिल होने का आह्वान किया। जोरावर सिंह जी भादला ने कहा कि वर्तमान में क्षत्रिय बालक बालिका धर्म से विमुख हो रहे हैं, स्वधर्म से अनभिज्ञ हैं उनको श्री क्षत्रिय युवक संघ धर्म की ओर उन्मुख करता है, स्वधर्म का पाठ पढ़ाता है। आज स्कूल में गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है। कैसी शिक्षा है? कैसी विडंबना है ? असली इतिहास कौन बताए? एक समय था जब घरों में दादीसा नानीसा अनेक प्रेरक कहानियां बालकों को सुनाती थीं जो बालकों में संस्कार निर्माण का काम करती थी। उन्होंने कहा कि माता निर्माता होती थी। रानी मदालसा का उदाहरण देते हुए कहा कि माता मदालसा ने उद्घोष किया कि मेरी कोख में पैदा होने वाला बच्चा दूसरी कोख में जाता है तो वह मेरे लिए लज्जा की बात होगी। 4 पुत्र हुए, चारों ब्रह्मज्ञानी लेकिन आज पाश्चात्य सभ्यता ने हमको इतना

दबोच रखा है कि हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। आज उस पवित्र कोख की जरूरत है जिसमें राम और कृष्ण जैसी आत्मा पैदा हो सके। क्या हमारा आंगन इतना पवित्र है? जिसमें इस तरह की महान आत्माएं खेल सके। यदि नहीं तो उसे पवित्र बनाना होगा। उसकी पवित्रता को बनाने का काम श्री क्षत्रिय युवक संघ करता है। 22 दिसंबर 2021 महाकुंभ का दिन होगा जिसमें आप सभी को संघ की ओर से आमंत्रण है, उसमें कहीं आप की जगह खाली न रह जाए, वहां विराट समाज के दर्शन करने का अवसर मिलेगा। वीरपाल सिंह गोठड़ा ने कहा कि समाज के प्रति पीड़ा जिनके हृदय में होती है वही ऐसे कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं और ऐसे कार्य करते हैं। व्यक्ति को अपने जीवन को बदलने के लिए अपने विचार बदलने पड़ते हैं। आज परिवार बालकों में संस्कार निर्माण में असफल हो गया, स्कूल केवल अपना सिलेबस पढ़ाने तक सीमित हो गए, इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसी संस्थाओं के अलावा कोई केंद्र नजर नहीं आता। ठाकुर राघवेंद्र सिंह डूंडलोद ने संघ कार्यक्रम में सहयोग करने की बात कही। समाज को एक साथ रहने की बात कही। पंचायत समिति सदस्य मौना कंवर ने हमारी संस्कृति, परंपरा जो आज हम भूलते जा रहें हैं, उनको जिंदा रखने की बात कही। कार्यक्रम में नवलगढ़ तहसील के बन्धुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में संघ साहित्य और संघशक्ति पथप्रेरक सदस्यता की स्टाल भी लगाई गई।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org